B.Ed – 1st Year **Nakul Sah**

Gender, School and Society **Assistant Professor**

Course- 6

Lecture – 22

Unit – 2

Schooling of girls

बलिकाओं की विद्यालयी शिक्षा

★ Rest of lecture – 21

बालिकाओं की शिक्षा के समाधान के लिए सुझाव

बालिका शिक्षा के विकास में अनेक बाधाएँ हैं लेकिन यदि साहसपूर्वक इनका सामना किया जाए तो इन पर विजय भी प्राप्त की जा सकती है। अतः अब हम बालिका शिक्षा की समस्याओं के समाधान के लिए सुझाव प्रस्तुत करेंगे जो निम्नलिखित प्रकार से हैं–

1. आर्थिक समस्या का हल–

केन्द्र सरकार का कर्तव्य है कि आर्थिक समस्याओं के समाधान के लिए राज्य सरकारों को पर्ण् अनुदान दें, तथा राज्य सरकारों का कर्तव्य है कि वे इस अनुदान का उपयोग बालिका शिक्षा के लिए उचित रूप से करें जिससे बालिकाओं की शिक्षा में वृद्धि की जा सके।

2. रूढ़िवादिता का उन्मूलन–

जब तक सामाजिक रूढ़िवादी विचारों का उन्मूलन नहीं किया जाएगा तब तक स्त्री शिक्षा का विकास सम्भव नहीं है।

3. शैक्षिक प्रसाशन में सुधार–

बालिका शिक्षा का सम्पूर्ण प्रशासन पुरूष वर्ग के हाथों में न होकर महिला वर्ग के हाथ में होना चाहिए प्रत्येक राज्य में एक शिक्षा उपसचांलिका तथा उसके अधीनस्थ विद्यालय निरीक्षिकाओं की नियुक्ति की जानी चाहिए। बालिकाओ ंके लिए शैक्षिक नीतियों एवं पाठ्यक्रमों का निर्धारण स्त्री शिक्षाविदों द्वारा किया जाए क्योकि स्त्रियाँ ही बालिकाओं की समस्या तथा आवश्यकता को भलीभाँति समझ सकती हैं।

4. दृष्टिकोण में परिवर्तन–

बालिका शिक्षा के विकास के लिए जनसाधारण के दृष्टिकोण में भी परिवर्तन करना होगा। इसके लिए जनसाधारण को शिक्षा का वास्तविक अर्थ बताने तथा उसके उद्देश्यों पर व्यापक प्रकाश डालने की आवश्यकता है। शिक्षा का`केवल नौकरी प्राप्त करने का साधन भाव न माना जाए। शिक्षा के महत्व एव ंउपयोगिता के प्रति जब हमारे देश के पुरूषो ंके व्यवहार में परिवर्तन आएगा तभी बालिकाओ ंके विकास में सुधार किया जा सकता है।

5. अपव्यय एवं अवरोधन की समस्या का समाधान–

बालिका शिक्षा में अपव्यय एवं अवरोधन को समाप्त करने के लिए कई बातों पर ध्यान देना आवश्यक है जैस – विद्यालय के वातावरण को आकर्षक बनाना पाठ्यक्रम को यथासम्भव रोचक एवं उपयोगी बनाने का प्रयास, रोचक एवं मनोवैज्ञानिक शिक्षण प्रणालियो का प्रयोग, परीक्षण प्रणाली में सुधार की आवश्यकता है। जिससे शिक्षा के मार्ग में आने वाली समस्याओ को दूर किया जा सकता है।

6. विभिन्न पाठ्यक्रमो की व्यवस्था–

बालिकाओं की पाठ्यक्रम व्यवस्था करते समय बालिकाओ की व्यक्तिगत क्षमताओं अभिवृत्तियों एवं रूचियों में भिन्नता का भी ध्यान रखना चाहिए। बालिकाओ के पाठ्यक्रम में सुधार के लिए विषय में कुछ सुझाव प्रस्तुत किए जा सकते हैं जैस – प्राथमिक स्तर के बालक–बालिकाओं के पाठ्यक्रम में समानता, गृहविज्ञान, सिलाई–कढ़ाई एव बुनाई की शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए। बालिकाओं के लिए सगीत तथा चित्रकला की शिक्षा व्यवस्था विशेष की जानी चाहिए। प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर भी शारीरिक शिक्षा की व्यवस्था करना परमावस्यक है।

7.शिक्षा के प्रति सरकार का उदारवादी दृष्टिकोण–

बालिका शिक्षा के प्रति सरकार को उदारवादी दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। बालिका शिक्षा की उपेक्षा न करके इसे राष्ट्रीय हित की योजना माननी चाहिए। विभिन्न साधनों के माध्यम से स्त्री शिक्षा के विकास में योगदान करना चाहिए।

8. ग्रामीण दृष्टिकोण में परिवर्तन–

ग्रामीण क्षेत्रों में भी व्यापक पैमाने पर समान शिक्षा का प्रसार किया जाना चाहिए। इसके लिए विभिन्न गोष्ठियों एवं आन्दोलनों के द्वारा ग्रामीण लोगो के व्यवहार में परिवर्तन लाने की आवश्यकता है। इसके लिए ग्रामीणों को शिक्षा का महत्व समझाया जाए तथा शिक्षा के प्रति उनकी जो परम्परागत विचारधाराएँ हैं, उनका उन्मूलन किया जाए।

9. बालिका विद्यालयों की स्थापना–

बालिका शिक्षा की समस्याओ का समाधान बालिका विद्यालयों की स्थापना करके किया जा सकता है। सरकार को चाहिए कि प्रयास करके अधिक से अधिक बालिका विद्यालयों की स्थापना करे। जिन बालिका विद्यालयों को सरकार द्वारा मान्यता नहीं प्राप्त है उन्हे शीघ्र ही मान्यता प्रदान करनी चाहिए। समाज के सम्पन्न व्यक्तियों को बालिका विद्यालय की स्थापना हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए।

10. सह–शिक्षण विद्यालयो में शिक्षिकाओ की नियुक्ति–

ग्रामीण अंचल के क्षेत्रों में सहशिक्षण विद्यालयों में शिक्षिकाओ की नियुक्ति की जानी चाहिए। इसके लिए ग्रामीण क्षेत्रों में अध्यापिकाओं के लिए निःशुल्क आवास आदि की सुविधाएँ प्रदान करनी चाहिए जो बालिका शिक्षा विकास में सहायक होगी।

●●●●●